THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): The question is:

"That the Bill to amend the Sick Industrial Companies (Special Provisions) Act, 1985, as passed by Lok Sabha, be taken into consideration."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We shall now take up clause-by-clause consideration of the Bill. There is one amendment by Shri Chaturanan Mishra. He is not here.

Clause 2 was added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI DALBIR SINGH: Sir, I move:

"That the Bill be passed."

The question was put and the motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): Now we shall take up the Appropriation Bill. Shri Mohd. Khaleelur Rahman... He is not present. Shri Chaturanan Mishra... Not present. Shri G. Swaminathan.

SHRI G. SWAMINATHAN (Tamil Nadu): I have already spoken, Sir.

SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV (Maharashtra): It should be passed without discussion: that would be better. The mood of the House is to pass all the Bills without discussion.

...(*Interruptions*)...

AN HON. MEMBER. They have come back! ... (*Interruptions*) ...

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We have taken up the Appropriation Bill. ...(*Interruptions*)... Shri Mohd. Khaleel Rahman.

THE APPROPRIATION (NO. 5) BILL, 1991—Contd.

श्री मोहम्मद खलीलुर्रहमान (आन्ध्र प्रदेश) : जनाब वाइस चेयरमैन साहब, अभी चार-पांच महीने पहले हुकूमत की जानिब से बजट पेश किया गया था और उस वक्त यह कहा गया था कि मुल्क के माहशी और सनती हालात बेहतर होंगे । मगर मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इन पांच छ महीनों में हमने देखा है कि जो भी इस्टीमेट बजट के जरिये पेश किये गये थे वे बिल्कुल मुकम्मिल तौर पर नाकाम हो चुके हैं । अब फर्टिलाइजर की सब्सिडी के ताल्लुक से एप्रोप्रिएशन में डिमांड की गयी है । मैं यह कहूंगा कि जहां तक फर्टिलाइजर की सब्सिडी का सवाल है इससे हमारे मुल्क का किसान काफी परेशान है और हमारे मुल्क की जिरात काफी मुतासिर हो चुकी है । फर्टिलाइजर की सब्सिडी पिछले कई सालों से चली आ रही थी मगर इंतिहाई अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि इस सब्सिडी को यकलख्त खत्म किया गया है । इससे रबी और मार्जिनल लेविल के किसान को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है । वह कतन इस काबिल नहीं है कि इतने कीमती दामों में फर्टिलाइजर को खरीद सकें और अपने खेतों में जिरात के लिए इस्तेमाल कर सकें । इससे एक तो किसान की माहशी हालत दिन ब दिन गिरती जा रही है और फिर दूसरा यह है कि जितनी पैदावार होनी चाहिए थी वह फर्टिलाइजर का इस्तेमाल नहीं करने की वजह से नहीं हो रही है । जाहिर है कि जब पैदावार नहीं होगी तो मुल्क की पूरी जो हमारी इक्नामी है वह यकीनन मुतासिर हो जाएगी ।

आज हम देख रहे हैं कि तेल की कीमतें क्या हैं । खाने के तेल की कीमत 40 रुपये से ज्यादा हो चुकी है, चावल महंगा हो चुका है, गेंहू महंगा है, दालें

[श्री मोहम्द खलिलुर रहमान]

महंगो है । आप यह बतलाइये कि जितनी भी इंशेशियल कमोडिटीज हैं इनकी पूरी की पूरी कीमतें आसमान से बातें कर रही हैं और आम आदमी इस काबिल नहीं है कि इनको खरीद सके । लिहाजा मैं यह पूछना चाहता हूं कि आपने फर्टिलाईजर पर जो सब्सिडी निकाली है क्या आपकी पालिसी कामयाब रही ? बिल्कुल नहीं रही। फिर दुबारा आपको इस पालिसी को लाना पड़ेगा और फर्टिलाइजर को सब्सीडाइज करना पड़ेगा ।

फिर दूसरी प्राइस राइज की बात है। अभी इसी सेशन में यहां पर कालिंग अटेंशन मोशन और शार्ट ड्यूरेशन के जरिये प्राइस राइज की बात को गयी । जितनी भी इसेंशियल कम्मोडिटीज हैं और जितने भी अशियां हैं सबकी कीमतें बढ़ रही हैं और एक दफा जब कीमत बढ़ती है तो फिर दुबारा उतरने का सवाल ही पैदा नहीं होता है । लिहाजा जरुरत इस बात की है कि इन कीमतों को बढ़ने न दिया जाए । अब यह सुनने में आ रहा है कि पैट्रोलियम प्रोडक्ट्स की कीमतों में और इजाफा हो रहा है । पैट्रोलियम और डीजल की कीमतें पहले ही से काफी बढ़ी हैं । सुना यह जा रहा है कि पैट्रोल और डीजल कीमतों में इजाफा किया जाएगा । मैं कहना चाहूंगा कि मिनिस्टर साहब अपने जवाब में वादे करें कि पैट्रोलियम प्रोडक्ट्स की कीमतों में इजाफा नहीं होगा। डीजल की कीमतों में भी अगर इजाफा हो जाएगा तो आप यकीन मानिए उसी तनासुख से, उसी लिहाज से और कई चीजों में इजाफा होगा ।

रेलवे फ्रेट भी काफी बढ़ा दिया गया है । रेलवे रेंट के बढ़ने से जराये नकलो हमल जो होते हैं वे सब के सब मुतासिर हो गये हैं... (**समय की घंटी**) टाइम कम है और यह इतना अहम सवाल है ।

तीसरा मैं यह कहना चाहूंगा कि यह देखा जा रहा है कि अरबन डवलपमेंट पर जितना पैसा खर्च किया जा रहा है, रूरल डेवलपमेंट पर उतना पैसा खर्च नहीं किया जा रहा है । हालांकि हमारे देश में 80 फीसदी पापूलेशन रूरल एरियाज में रहती है। जरुरत इस बात की है कि रूरल डेवलपमेंट किया जाए । आप जाइये देहातों में और देखिए तालीम का क्या हाल है । प्रापर स्कूल नहीं हैं । स्कूल्स अगर रखे गये हैं तो स्कूल्स की बिल्डिंग्स नहीं हैं, झाड़ों के नीचे पढ़ाया जा रहा है, फर्नीचर नहीं है, किताबें वक्त पर मुहैया नहीं हो रही हैं । इसी लिहाज से हैल्थ की क्या हालत है । गांवों में दवाखाने तक नहीं हैं । हत्ता के जो एम०बी०बी०एस० डाक्टर्स हैं वे गांवों में जाकर मुलाजमत करना पसंद नहीं करते और सबके सब शहरों में रहना चाहते हैं । लिहाजा अब रूरल डेवलपमेंट को तरक्की देने की जरुरत है ..... (**समय की घंटी**) मैं खत्म कर रहा हूं । एक मिनट में अपनी बात खत्म करुंगा । अरबन डेवलपमेंट में काफी पैसा खर्च किया गया है और उसी हिसाब से बजट में हम कह सकते हैं । अगर रूरल डेवलपमेंट को जो नजरअदाज किया जा रहा है उसके ताल्लुक से हुकूमत से अपील करुंगा कि आप रूरल डेवलपमेंट पर ज्यादा से ज्यादा पैसा खर्च करें । शुक्रिया ।

†[شری محمد خلیل الرحمان

(آندھرا پردیش) : جناب وائس چیرمین صاحب - ابھی چار پانچ مہینے پہلے حکومت کی جانب سے بجٹ پیش کیا گیا تھا - اسوقت یہ کہا گیا تھا کہ ملک کے معاشی اور صنعتی حالات بہتر ہونگے - مگر مجھے افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ ان پانچ مہینوں میں ہم نے دیکھا ہے کہ جو بھی استیمیٹ بجٹ کے ذریعے پیش کئے گئے تھے وہ بالکل مکمل طور پر ناکام ہو چکے ہیں - اب فرٹیلائزرز کی سبسیڈی

†Transliteration in Arabic Script.

سکے - لہذا میں یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ آپ فرٹیلائز پر جو سبسڈی نکالی کیا آپکی پالیسی کامیاب رہی - بالکل نہیں رہی - پھر دوبارہ آپکو اس پالیسی کو لانا پڑیگا اور فرٹیلائز کو سبسیڈائز کرنا پڑیگا -

پھر دوسری پرائس رائز کی بات ہے - ابھی اسی اسٹیشن میں یہاں پر (کالنگ اٹینشن موشن) اور (شارٹ ڈیوریشن ڈسکشن) کے ذریعہ پرائس رائز کی بات کی گئی جتنی بھی اسینشیل کامروڈیز ہیں اور جتنی بھی اشیاء ہیں سبکی قیمتیں بڑھ رہی ہیں - اور ایک دفعہ جب قیمت بڑھتی ہے تو پھر دوبارہ قیمت اتونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا ہے - لہذا ضرورت اس بات کی ہے کہ ان قیمتوں کو بڑھنے نہ دیا جائے- اب یہ سننے میں آ رہا کہ پٹرولیم پروڈکشن کی قیمتوں میں اور اضافہ ہو رہا ہے - پٹرولیم اور ڈیزل کی قیمتیں پہلے ہی سے کافی بڑھی ہوئی ہیں - سنا یہ جا رہا ہے - کہ پٹرولیم اور ڈیزل کی قیمتوں میں اضافہ کیا جائیگا - میں کہنا چاہونگا کہ منسٹر صاحب اپنے جواب میں واضح کریں کہ پٹرولیم پروڈکشن کی قیمتوں میں اضافہ نہیں ہوگا - ڈیزل کی قیمتوں میں بھی اضافہ ہو جائیگا تو آپ یقین مانیئے اسی تناسب سے اسی لحاظ سے اور کئی چیزوں میں اضافہ ہوگا -

ریلوے فریٹ بھی کافی بڑھا دیا گیا ہے ریلوے فریٹ بڑھنے سے ذرائع ونقل حمل جو ہوتے ہیں وہ سب نے تعلق سے ایمرجینسیشن میں ڈسائڈ کی گئی ہے - میں یہ کہوں گا کہ جہاں تک فرٹیلائزز کی سبسڈی کا سوال ہے - اس سے ہمارے ملک کا کسان کافی پریشان ہے اور ہمارے ملک کی زراعت کافی متاثر ہوچکی ہے - فرٹیلائزز کی سبسڈی پچھلے کئی سالوں سے چلی آ رہی تھی مگر انتہائی افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ اس سبسڈی کو بیک وقت ختم کیا گیا ہے - اس سے اسمال اور مارجنل لیول کے کسان کو کافی پریشانی کا سامنا کرنا پڑ رہا ہے - وہ قطعاً اس قابل نہیں ہے کہ اتنے قیمتی داموں میں فرٹیلائز کو خرید سکے اور اپنے کھیتوں میں زراعت کیلئے استعمال کر سکے - اس سے ایک تو کسان کی معاشی حالات دن بہ دن گرتی جا رہی ہے اور پھر دوسرا یہ ہے کہ جتنی پیداوار ہونی چاہئے تھی وہ فرٹیلائز کا استعمال نہیں کرنے کی وجہ سے نہیں ہو رہی ہے - ظاہر ہے کہ جب پیداوار نہیں ہوگی تو ملک کی پوری جو ہماری اکانامی ہے وہ یقیناً متاثر ہو جائیگی -

آج ہم دیکھ رہے ہیں - کہ تیل کی قیمتیں کیا ہیں - کھانے کے تیل کی قیمت ۳۰ روپئے سے زیادہ ہو چکی ہے - چاول مہنگا ہو چکا ہے - گیہوں مہنگا ہے- دالیں مہنگی ہیں - آپ یہ بتلائیے کہ جتنی بھی اسینشیل کامروڈیز ہیں - انکی پوری کی پوری قیمتیں آسمان سے باتیں کر رہی ہیں- اور عام آدمی اس قابل نہیں ہے کہ انکو خرید

کے سب متعاقو ہو گئے ہیں ..... (وقت کی گھنٹی) .... قائم کم ہے اور یہ اتنا سوال ہے -

تیسرا میں یہ کہنا چاہونگا کہ یہ دیکھا جا رہا ہے کہ اربن ڈیولپمنٹ پر جتنا پیسہ خرچ کیا جا رہا ہے - رورل ڈیولپمنٹ پر اتنا پیسہ خرچ نہیں کیا جا رہا ہے - حالانکہ ہمارے دیش میں ۸۰ فیصدی پاپولیشن رورل ایریاز میں رہتی ہے - ضرورت اس بات کی ہے کہ رورل ڈیولپمنٹ کیا جائے- آپ جتنے دیہاتوں میں اور دیکھئے تعلیم کا کیا حال ہے - پرایر اسکول نہیں ہیں - اسکولس اگر رکھے گئے ہیں تو اسکولس کی بلڈنگ نہیں ہے - جھاڑوں کے نیچے پڑھایا جا رہا ہے فرنیچر نہیں ہے - کتابیں وقت پر مہیا نہیں ہو رہی ہیں - اسی لحاظ سے ہیلتھ کی کیا حالت ہے - گاؤں میں دواخانے تک نہیں ہیں - حتی کہ جو ایم - بی - بی - ایس- ڈاکٹرس ہیں وہ گاؤں میں جاکر ملازمت کرنا پسند نہیں کرتے اور سب کے سب شہروں میں رہنا چاہتے ہیں لہذا اب رورل ڈیولپمنٹ کو ترقی دینے کی ضرورت ہے - .... (وقت کی گھنٹی) .... میں ختم کر رہا ہوں - ایک منٹ میں اپنی بات ختم کروں گا - اربن ڈیولپمنٹ میں کافی پیسہ خرچ کیا گیا ہے اور اسی بجٹ میں ہم کہہ سکتے ہیں - مگر رورل ڈیولپمنٹ کو جو نظر انداز کیا جا رہا ہے اس کے تعلق سے اپیل کروں گا کہ آپ رورل ڈیولپمنٹ پر زیادہ سے زیادہ پیسہ خرچ کریں - شکریہ -]

श्री चतुरानन मिश्र : उपसभाध्यक्ष जी, चूंकि काफी देर हो गई है और सब जाने के मूड में हैं, इसलिए मैं कुछ खास सवालों को रख देता हूं। मैं फाइनेंस मिनिस्टर साहब से कहूंगा कि वह थोड़ा हमारी बात को सुनने की कोशिश करें।

आपने गरीब किसानों के लिए, स्माल एंड मार्जिनल फार्मर्ज के लिए चीपर फर्टिलाइजर देने का कहा और अभी आप हमसे 250 करोड़ रुपये मांग रहे हैं। क्या आप इंक्वायरी करवा कर देखेंगे कि जिनके लिए यह छोड़ा था, उनको यह मिला भी है? हम आपसे कहने के लिए तैयार हैं कि मजारिटी आफ दी पेजेंट्स जिनके लिए आपने दिया, उनको नहीं मिला और आपने ब्लैक मनी सृजन किया है। यह हमारा चार्ज है और इसीलिए आपसे अनुरोध करेंगे कि आप इस बात को जंचवा लें।

दूसरी बात जो हम फाइनेंस मिनिस्टर से कहना चाहेंगे, वह यह है कि यह कोई तरीका है कि पांच-पांच आईटम्स, आई.डी.पी.एल., डिफेंस, हैल्थ एंड वैलफेयर और इनफर्मेशन एंड ब्राडकास्टिंग, इन चार मुद्दों में सुप्रीम कोर्ट तक का फैसला मजदूरों के एक-एक केस के लिए करवाते हैं। इसमें आप जरा इस बात को देखें कि एक लाख रुपया देने के लिए आप एक घंटा इस हाऊस का और एक घंटा उस हाऊस का टाईम बरबाद करते हैं। जिसका मतलब कई लाख का सरकारी धन का खर्च है।

n totality you lose more than for which you seek the sanction of the Parliament and lakhs we lose in litigations.

क्योंकि आपके अफसरों को इसमें भत्ता, कमीशन मिलता है। इसीलिए आपको

प्राइमरी स्टेज में ही अगर एक कोर्ट में हार जाएं, तो आप इन रुपये को बचा सकते हैं और नहीं तो टोटैलिटी में गवर्नमेंट को एक-एक लाख के लिए सेंक्शन के लिए यहां कई लाख चुकाना पड़ता है। इसका औचित्य हमको आप ही बता दीजिए। अगर एक लाख रुपया भी मिनिस्ट्री अपने फंड से एडजस्ट नहीं कर सकती है, तो फिर आप हमको इकानमी का क्या बता रहे थे कि हम इकानमी करने जा रहे हैं। यह क्यों बरबादी कर रहे हैं? जो गरीबों का सरकारी पैसा है, उसको इस तरह से बरबाद क्यों करते हैं?

एक दूसरी चीज आप देख लीजिए। वालंटरी रिटायरमेंट के लिए केमिकल्ज एंड फर्टिलाइजर्ज, हिंदुस्तान फर्टिलाइजर, फर्टिलाइजर कार्पोरेशन आफ इंडिया, मिनिस्ट्री आफ माइन्स, नेशनल इंडस्ट्रियल एंड डिवेलपमेंट कार्पोरेशन, सबों के लिए वालंटरी रिटायरमेंट के लिए पैसा लिया है। अगर जनरल रेवेन्यु से पैसा लेकर वालंटरी रिटायरमेंट करवाना है, तो इनमें इकानमी क्या हुई। यह तो उस इंडस्ट्री को अर्न करना पड़ेगा, नहीं तो आप दूसरों को भी दीजिए। सारे देश में तो आप कह रहे हैं कि प्राइवेट और पब्लिक सेक्टर दोनों को एक मानेंगे। तो सारे देश को तो आप दीजिए वालंटरी रिटायरमेंट का पैसा। इसलिए हम आपसे अनुरोध करेंगे कि यह पैसा आपको नहीं देना चाहिए। मजदूरों का हक है, वह उनको मिलना चाहिए। वह कोर्ट में भी लेगा और वैसे भी लेगा, लेकिन यह पद्धति नहीं अपनानी चाहिए कि छंटनी होगी, तो हम जनरल रेवेन्यु से पैसा दे देंगे। इसके पक्ष में हम नहीं हैं। अगर आई.एम.एफ. वाले आपको लोन देते हैं, तो आप दे दीजिए, हमको एतराज नहीं है। लेकिन वह कनसर्न को पे-अप करना पड़ेगा हम जनरल रेवेन्यु से देने के पक्ष में नहीं हैं।

श्री जगेश देसाई (महाराष्ट्र) : वह कहां से देंगे?

श्री चतुरानन मिश्र : वह जहां से भी दें। अगर आप कह रहे हैं, एक मशीन बेचें। हमको क्या मालूम है।

श्री आर० के० धवन (आन्ध्र प्रदेश) : फिर आप ही तो शोर डालते हैं।

श्री चतुरानन मिश्र : सुनिये, हम तो शोर डालते ही हैं और वहां भी डालेंगे यह भी आपको कह देते हैं। लेकिन एक वक्त बहाली के लिए पैसा लिया, अब जाने के लिए पैसा लीजिएगा, बीच में रहेगा, तब पैसा लीजिएगा। पर जनरल रेवेन्यु से हम पैसा देने के पक्ष में नहीं हैं।

श्री आर० के० धवन : आपकी सजेशन काफी अच्छी है।

You suggest this to the Government. They will accept it with pleasure.

SHRI JAGESH DESAI: That means you don't want they should be paid.

SHRI CHATURANAN MISHRA: Let them sell the machines and pay to the workers if they want to retrench them. I want that you should not facilitate it. That is the point.

श्री आर० के० धवन : वालंटर रिटायरमेंट कर देंगे।

श्री चतुरानन मिश्र : वालंटरी रिटायरमेंट तो अभी पांच-सात वर्षों में इवाल्व हुआ है। मैं एक-दो बिंदु और कह कर अपनी बात समाप्त करना चाहूंगा। औद्योगिक हालत बहुत खराब है।

उपसभाध्यक्ष जी, इन्होंने जो नई नीति अख्तियार की है, उससे इंडस्ट्रियल ग्रोथ रेट माइनस पर चला गया है, जो पिछले साल 14.5 प्रतिशत था। ऐसी अच्छी नीति यह बना रहे हैं। तो ठीक है, थोड़े दिनों के बाद पता लगेगा।

श्री जगेश देसाई : वह रेट तो अगस्त तक का है।

श्री चतुरानन मिश्र : ठीक है बाद में होगा .....(व्यवधान) अभी हम दो बिंदुओं पर आपको कहना चाहेंगे।

अभी हमें खबर मिली है कि हमारी ट्रेड यूनियन के नेता ओ०एन०जी०सी० के जो शिवसागर में जनरल सैक्रेटरी हैं, उनको बिना किसी वजह के सेना ने जाकर गिरफ्तार कर लिया और यूनियन के आफिस को बंद कर दिया। वह कम्युनिस्ट पार्टी के नेता हैं। तो हम इस बात को उठाना चाहेंगे कि इसी डिफेंस के लिए आप हमसे पैसा मांग रहे हैं कि हमारी ट्रेड यूनियन के आदमी को मिलिटरी गिरफ्तार कर ले। तो आप ही बतायें कि क्या हो रहा है? हमने ध्यान आकर्षित किया है और हम चाहेंगे कि सरकार इस पर जवाब दे। आखिरी मसला, मेरा यह कहना है, लास्ट प्वायंट, कि केन्द्र की सरकार की कुछ पालिसी के चलते बिहार में यह उग्र भावना फैल रही है कि केन्द्र बिहार की उपेक्षा कर रहा है। कई बार इस सदन में उठाया गया कि जो रेलवे का आप स्टील का फ्रेट रखते हैं उससे बिहारवासियों को बहुत ज्यादा घाटा मिलता है। कई बार यह उठाया जा चुका है। हमने आपको बता दिया है कि प्रति टन रेल भाड़ा में 766 रुपये बिहार को घाटा लगता है, पर आप नहीं सुनते हैं। हम आपको बता चुके हैं कि किस तरह से मिनरल रायल्टी जो है उसका कैसे अभी तक आपने हल नहीं किया। नतीजा यह हुआ कि बिहार की योजना को बहुत छोटा कर दिया गया है। तीसरी बात, जो हम उसी के सिलसिले में आपको कहना चाहेंगे कि कोयला भी जो बिहार में होता है बिहार को ट्रेन से नहीं दिया जाता है। इसलिये उग्र रूप से बिहार के अन्दर में केन्द्र विरोधी भावना फैल रही है। मैं सरकार का ध्यान आकर्षित करता हूं कि आप तुरन्त इस पर विचार कीजिए, नहीं तो बिहार कोई छोटा-मोटा राज्य नहीं है, काश्मीर के लिए मिलिट्री आप भेज दे सकते हैं और नार्थ-ईस्ट के लिए, लेकिन बिहार जैसे राज्य या उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में वहां अगर यह हालत पैदा होगी तो यह देश नहीं चल सकेगा। इसीलिए जब तक वह हालत खराब नहीं होती, मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि तूरन्त बिहार की इस समस्या के बारे में आप अविलम्ब विचार कीजिए और नहीं तो परिस्थिति बिल्कुल खराब हो जाएगी और हम देश को एक रखने में कठिन परिस्थिति में पड़ जायेंगे।

इन्हीं बिंदुओं की ओर हम आपका ध्यान दिलाना चाहते हैं। वैसे पैसा-वैसा तब पहले ही खर्चा कर दिए हैं, ले ही लीजिएगा, वह कोई बात नहीं है, यह मालूम है कि आप पहले ही से खर्चा कर देते हैं, तो आपको दे दिया जायगा।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI NAGEN SAIKIA): Prof. Saurin Bhattacharya. Not here, Mr. A. P. Gautam. He is also not here. Mr. Ram Awadhesh Singh. You have got only three minutes. Within three minutes you have to make your point ... (*Interruptions*) ... You should not show your back to the Chair. It is very bad...(*Interruptions*)...If you are not prepared to speak, we shall proceed with the Bill...(*Interruptions*) You are an honourable Member of this House, you should not show your back to the Chair. It is very bad. Go ahead, you have got only three minutes.

श्री राम अवधेश सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं बिल्कुल प्वायंटेड बात पूछूंगा। अभी प्रधान मंत्री जी ने भाषण दिया कि पालिसी के बारे में

सरकार सब कुछ करने के लिए तैयार है, जो पालिसी की गड़बड़ी है, लेकिन जो पब्लिक सैक्टर में हानि हो रही है, मैनेजीरियल गड़बड़ी से जो प्रबन्ध के बारे में गड़बड़ी हो रही है और जो यह सी.एम.डी. हैं या हाई-अप्स हैं, उसके मैनेजमेंट में उन लोगों की लूट के चलते जो हानि हो रही है और उसकी लूट की वजह से हानि होकर आज पब्लिक सैक्टर को ब्रैकेटेड खड़ा किया गया है कि पब्लिक सैक्टर खराब हो रहा है, उसके बारे में मैं कैटेगोरिकल उत्तर चाहता हूं यह मंत्री जी से कि उन ऐसे कर्मचारियों के और ऐसे पदाधिकारियों के खिलाफ सरकार क्या कोई ठोस कदम उठाएगी जिनके खिलाफ लूटने के ठोस प्रमाण हैं? जैसे सीमेंट कार्पोरेशन आफ् इंडिया है, उसमें भयंकर लूट है। वहां के सी.एम.डी. ने एक ऐसा माफिया सिन्डीकेट वहां पर बनाया है, सी.एम.डी. सीमेंट कार्पोरेशन आफ् इंडिया का जो व्यक्ति है उसने चोरों को बसाकर रखा है और लूट रहा है। पिछले दिनों यहां दिल्ली में, अब देखिए कितनी लूट हो रही है, लूट इतनी है कि 300 बोरा वह ट्रक में लादता है और कागज में 200 दिखाता है। नतीजा यह होता है कि इस तरह से लूट चलती है। और जब वह पकड़ में आया आफीसर तो उसके खिलाफ कार्यवाही की गई। प्रधान मंत्री के स्तर से लिखा गया कि उसके खिलाफ सी.बी.आई. की जांच कराई जाए, सी.एम.डी. के खिलाफ जांच कराई जाए।

मान्यवर, हेवी इंडस्ट्रीज में ऐसे आफीसर हैं, जो ओवर-स्टे कर रहे हैं। उनका मार्च में टर्म खतम हो गया, फिर भी ऐसे लोगों को उसमें बढ़ावा दिया जा रहा है। चीफ विजलेन्स आफीसर, जो मिस्टर काक थे, उनकी नियुक्ति हुई थी इस काम के लिए, कि भ्रष्टाचार की वह जांच करें। लेकिन, उनको वहां रहने नहीं दिया सी.एम.डी. ने, और उनको भगा दिया, जबकि चीफ विजलेन्स आफीसर की नियुक्ति प्रधान मंत्री के स्तर से वी.पी. सिंह के जमाने में, अजित सिंह के जमाने में हुई थी। यह जो सीमेंट कारपोरेशन के चेयरमैन हैं, वह भारत वैगन में पहले काम करते थे। वहां के ऐसे पांच-छह आफीसरों को बुलाकर उन्होंने अपने यहां रखा है। .... (*व्यवधान*)..

श्री सुरेन्द्रजीत सिंह अहलुवालिया (बिहार): हर बार आप एक सी.एम.डी. को पकड़ लाते हैं। क्या बात है?

श्री राम अवधेश सिंह: चोरी में पकड़ा था। ..... (*व्यवधान*).... अरे, हानि कैसे हो रही है?... (*व्यवधान*)...

श्री वी. नारायणसामी (पांडिचेरी): एक दिन सेल को ले आए, दूसरे दिन सीएमडी को ले आए, तीसरे दिन कोयला ले आए। .... (*व्यवधान*)....

श्री राम अवधेश सिंह: आप भी ले आइए जनता की लूट बंद हो जाए। मैं तो चाहता हूं, आप, सब लोग, हम लोग मिलकर इस पर काम करें ताकि यह जो पैसे की लूट होती है, जो गरीबों का पैसा है, टैक्स पेयर का पैसा है, इसकी लूट बंद हो।

मान्यवर, मैं यह कह रहा हूं कि उसमें नियम भंग हुआ है। भारत वैगन कंपनी ने क्लीयरेन्स नहीं दी, उसने रिलीव नहीं किया और ऐसा लिखा है ए.सी.सी.आई. को कि इन आफीसरों को बिना हमारी क्लीयरेन्स के कैसे, अपने यहां एपायण्ट कर लिया। मान्यवर पब्लिक अण्डरटेकिंग्स में यह रूल है कि जब कोई आफीसर पहले किसी अंडरटेकिंग में काम कर रहा है तो वह क्लीयरेन्स देगा कि हां, हमारे यहां यह ठीक है। लेकिन, भारत वैगन में जो चार-पांच आफीसर काम करते थे उनके खिलाफ सी.बी.आई. की जांच चल रही थी, विजलेन्स की जांच चल

[श्री राम अवधेश सिंह]

रही थी और उनसे क्लीयरेन्स लिए बिना सी.एम.डी. ने ऐसा किया और करोड़ों रुपए का घपला किया। .....(**समय की घंटी**)....

एक मिनट और, मान्यवर, नया गांव में एक यूनिट फंक्शन में है, कमीशन में है। लेकिन, उसको कमीशन में न दिखाकर के उसका घाटा पुराने में दिखा रहे हैं ताकि वह घाटा न दिखाई पड़े और लगे कि फायदा है। तो मैं सरकार से साफ तौर पर यह जानना चाहता हूं कि क्या उसके खिलाफ सरकार इन्क्वायरी करेगी? और, ऐसी लूट करने वाले आफीसर के खिलाफ एफ आई.आर. करेगी? क्या प्रधान मंत्री की चिट्ठी दबाने वाले, जो हेव इंडस्ट्रीज़ा लेकर सीमेंट कारपोरेशन में हैं, उन पर कोई कार्यवाही की जाएगी? अगर कार्यवाही नहीं की जाएगी तो इसके खिलाफ जनता को लड़ना पड़ेगा और मुझको भी इस सदन में लड़ना पड़ेगा। धन्यवाद।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI SHANTARAM POTDUKHE): Hon. Vice-Chairman, Sir, I am grateful to all the Members who have participated in this discussion and debate. They have made valuable suggestions. Their suggestions have been taken note of.

Sir, this hon. House is aware that the Budget for the current year which was present in Lok Sabha on 24th July, 1991 envisaged a Budgetary deficit of Rs. 7719 crores and a fiscal deficit of Rs. 37,727 crores. The Finance Minister, in his Budget Speech, has drawn attention to the grave economic crisis of the country and the necessity of determined action on the part of the Government towards a rational fiscal system and to contain the deficit. Towards this end, we have taken a number of measures. We have advised the various Ministries that they should absorb the liability on account of additional D.A. from within their sanctioned Budget provisions. We have also imposed a cut of five per cent on the provisions so that certain unavoidable and other post-Budget commitments can be met without increasing the Budget deficit or the fiscal deficit. Sir, great care has been taken in formulating the present batch of supplementary demands. The Ministries who have sought supplementary demands for additional expenditure which have been included in this batch of supplementary demands have, by and large, identified savings in their budgets to meet the additional commitments. In only three cases amounting to Rs. 254.22 crores, the Ministries concerned could not locate savings. These will however be met out of savings identified in the Government's Budget as a whole. These include Rs. 250 crores for fertilizer subsidy following the modifications made in the increases in fertilizer prices originally announced in the Budget. Thus even though the gross supplementary demands included in this batch are for a total of Rs. 304.13 crores these will not involve any net additional cash outgo.

Among the various items for which provisions have been included in the present batch of supplementary demands, I would like to highlight the provision of Rs. 25 crores for establishment of a Corporation for the welfare of backward classes which was announced in the Finance Minister's Budget speech. Another major post-budget commitment is the decision to provide fertilizers to small and marginal farmers at pre-revised prices. This scheme is expected to cost around Rs. 405 crores in the current year. Pending a final assessment the amounts required by the various State Governments for this purpose are being released by the Department of Agriculture by temporary reappropriations from within their sanctioned bedget and supplementary demand to the extent needed will be brought before Parliament later in the financial year. The present batch of supplementary demands includes Rs. 27 lakhs for providing fertilizer subsidy to small and marginal farmers in the Union Territory of Delhi under this scheme.

As the supplementary demands are for urgent and unavoidable items of expenditure which are fully matched by corresponding savings. I am sure that this Hon'ble House would vote the demands.

Points raised by the hon. Members pertaining to other Ministries and departments will be forwarded to the concerned Ministries and departments for furnishing suitable replies direct to the hon. Members.

I request the hon. House to pass this Bill and return it to Lok Sabha.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): The question is:

> "That the Bill to authorise payment and appropriation of certain further sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1991-92, as passed by Lok Sabha, be taken into consideraton."

The motion was adopted.

THE VICE-CHAIRMAN (DR. NAGEN SAIKIA): We shall now take up clause-by-clause consideration of the Bill.

Clause 2 and 3 and the Schedule were added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI SHANTARAM POTDUKHE: Sir, I move:

> "That the Bill be returned."

The question was put and the motion was adopted.

STATEMENT BY THE MINISTER

III. Re. Verification and evaluation of Customs Duty to a Multinational Company by the Government

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI RAMESHWAR THAKUR): Sir, some Hon'ble Members of the House alleged that there was a move by the Government to hand over the customs appraisement work to a Swiss multi-national Company at the behest of World Bank and IMF. I categorically deny that there is any such move.

As Hon'ble Members are aware, under-invoicing and over-invoicing take place in our imports and exports. This entails loss of revenue and foreign exchange. Invoice manipulations occur in the country of export. It, therefore, often becomes difficult for our Customs authoritites sitting in India to detect and establish this.

There are professional services which specialise in detecting these malpractices at the country of export itself. They do so by preshipment inspection of goods at the country of export before they are despatched. SGS, Lloyd's Register, etc., provide such specialised services.

SGS offered their services recently. They also held exploratory discussions with the Finance Ministry officials. To study thte system in operation on the spot, a team of two officials visited Singapore and Indonesia. The report of the delegation is under examination.

Sir, pre-shipment inspection, even as this phase implies is an inspection to be carried out in foreign ports before goods intended for being imported into India are actually shipped. Such an inspection is not carried out by our customs department or for that a matter, by any Indian authority today. It is in this area the SGS has claimed expertise and experience and offered their services. I would also like to point out that what the company has outlined to our customs authorities, is a package of services that they offer. They have not so far even come to the stage of indicating their charges for the services offered. Thus there is no